International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232
Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 4; Issue 2; March 2018; Page No. 23-24

चित्रा मुद्गल के उपन्यास 'गिलिगडु' में अभिव्यक्त वृद्ध जीवन

Dr. P Ganesan, Lakshmidevi K
Associate Professor, Nehru Arts & Science College, Coimbatore, Tamil Nadu, India
M.Phil Hindi Research Scholar, Nehru Arts & Science College, Coimbatore, Tamil Nadu, India

सारांश
आधुनिक हिंदी साहित्य में 1960 के बाद महिला साहित्यकारों ने अपना अलग स्थान निर्माण किया है। नारी अपने तथा समाज की अन्य नारियों की अनुभवों को शब्दबद्ध करने लगी।

मूल शब्द: चित्रा मुद्गल, गिलिगड, आधुनिक हिंदी साहित्य

प्रस्तावना

चित्रा मुद्गल प्रतिष्ठित कहानीकार और उपन्यासकार है। चित्रा जी का लिखा हुआ गिलिगडु (2004) एक लघु उपन्यास है। यह उपन्यास आत्मकथा शैली में लिखा है। तेरह दिन में चले दो वृद्धों की कथा यह उपन्यास में अच्छी तरह चित्रित किया। समाज के वृद्धों की आज का हाल यहाँ गहरी रूप से वर्णित किया।

चित्रा मुद्गल का उपन्यास 'गिलिगडु' में यथार्थ और समसामयिकता, स्वप्न और फैंटेसी, स्मृति और विस्तृति के कई आयामों को छूता अपनी महत्वपूर्ण उपस्थिति दर्जा कराता है। रचना को पढ़ते समय हमारे अनुभव में कुछ नया जुड़ता चला जाता है। वृद्ध जीवन के तमाम अंधेरे कोनों को अनावृत्त करती लेखिका स्त्री चेतना में पड़े गहरे जख्मों की निशानदेही करती है। पहचान का संकअ उनमें से एक है। वृद्ध की पीड़ा को व्यक्त करती है। यह रचना उसके कारणों की खोज करती है। पूरा उपन्यास संवेदना के क्षरण की महागाथा बनकर उभरता है। जीवनानुभवों का रचनात्मकता के साथ गहरा रिश्ता होता है और रचनाकार इन्हीं अनुभवों का रूपांतरण रचना में अंतर्मुक्त जीवन सत्य के उद्घाटन में करता है।

> ''बूढों के साथ लोग कहाँ तक वफ़ा करें
> बूढों को भी जो मौत लन आए तो क्या करें''[1]

आज़ादी के बाद भारतीय समाज के विकास की जो कार्य हम बात करते है तो एक स्तर पर बाज़ारवाद और उदारीकरण हमें कहीं मनुष्य के हित की बात लगती है। एक सभ्य समाज में मनुष्य भौतिक सुखों का अधिकारी है, यह बात एक हद तक तो ठीक है। लेकिन ये सारा विकास जिस मनुष्य के हित की बात करता है, वही मनुष्य जीवन के अंतिम पड़ाव में आकर उपेक्षित और असहाय होकर रह जाता है। वैज्ञानिक प्रगति के साथ जहाँ मानव की ओसत आयु बढ़ती जा रही है, वहीं बूढ़ापे की समस्याएँ भी बढ़ रही है। आधुनिक जगत में, औद्योगिक प्रगति के युग में वृद्धजन अपने आपको बेहद फालतू और अनुपयोगी समझाता हुआ घोर एकाकीपन तथा उपेक्षा का शिकार होते जा रहे हैं। जब कि सही मायने में उम्र बढ़ने का अर्थ निष्क्रिय होना नहीं है, बल्कि समाज और देश केलिए अधिक उपयोगी बनकर सार्थक और जीवंत जीवन जीना है। आज हमारी चिंता का विषय विशाल वृद्ध जब समुदाय के जीवन को सुखमय बनाने से संबंधित है।

वर्तमान में वृद्धों की समस्या को केंद्र में रखकर पर्याप्त साहित्य सृजन हो रहा है और इसी कडी में चित्रा जी द्वारा लिखित उपन्यास 'गिलिगडु' केंद्र में आया। इसमें बुढ़ापे का दर्द, घर में उपेक्षित व्यवहार तथा दर–दर की ठोकरों खाते घर से बाहर निकाले गए वृद्धों के जीवन की व्यथा को चित्रित किया गया है। यह आकार में छोटा, लेकिन संवेदनशीलता का अथाह भंडार है। इसमें तेरह दिन की कहानी के माध्यम से उपन्यास के मुख्य पात्र सेवानिवृत्त सिविल इंजीनियर बाबू जसवंत सिंह व सेवानिवृत्त कर्नल स्वामी। और इनके जीवन का पूरा खाका ही नहीं अपितु आज के बदलते जीवन मूल्यों के परिप्रेक्ष्य में घर व परिवार में बुजुर्गों की वास्तविक स्थिति का चित्रण बडी बेबाकी से हुआ है। इस उपन्यास में प्रमुख रूप से संयुक्त परिवार का बिखराव, परिवार में बुजुर्गों की भूमिका, और वर्तमान पारिवारिक माहौल में उनकी वास्तविक स्थिति को कई प्रसंगों के माध्यम से उजागर किया गया है।

गिलिगडु का शाब्दिक अर्थ 'चिडियाँ' है, लेकिन प्रस्तुत उपन्यास में लेखिका ने 'गिलिगडु' शब्द का प्रयोग उपन्यास के बुजुर्ग पात्र कर्नल स्वामी की जुड़वाँ पोतियों केलिए किया है। 'गिलिगडु' उपन्यास की कहानी ऐसे दो बुजुर्गों की है जो घर–परिवार और आर्थिक रूप से समर्थ होते हुए भी अकेले हैं। हमारे समाज में बुजुर्गों की कई श्रेणियाँ है। इनमें तीन श्रेणियाँ प्रमुख है – एक वे है जिसका कोई परिवार नहीं है, इसलिए वे अकेले रहते है, दूसरे वे है जो भरा पूरा परिवार होते हुए भी अकेले रहने को बाध्य है और तीसरे वे है जो परिवार में रहकर भी अकेले है। हमारे समाज में इन तीनों प्रकार के पात्र है। इस उपन्यास में भी तीनों तरह के पात्र मौजूद है। उपन्यास के पात्र मिस्टर और मिसेज श्रीवास्तव जिनका जिक्र उपन्यास के अंत में बहुत ही अल्प समय के लिए उपन्यास के पात्र कर्नल स्वामी के पडोसी के रूप में हुआ है, वे दोनों दंपती इसलिए अकेले रह रहे हैं क्योंकि उनकी अपनी कोई औलाद नहीं है वही उपन्यास के दूसरे पात्र कर्नल स्वामी जिनका भरा–पूरा परिवार है, आर्थिक रूप से समर्थ है फिर भी पत्नी के मौत के बाद निपट अकेले रहने को अभिशप्त है, हालांकि वो स्वयं इस बात को कभी किसी के सामने जाहिर नहीं होने देते हैं। इसी तरह उपन्यास पात्र बाबू जसवंत सिंह है जो कि परिवार में रहते हुए भी अकेले है, क्योंकि परिवार के लिए अब वो अतिरिक्त हो चुके हैं, उनकी कोई उपादेयता अब नहीं रहीं। उनको घर में कोई स्थान

नहीं है। पुत्र, बहु और पोते भी उनकी कोई स्थान नतहीं दिया। खाना खाते समय घर के सभी सदस्य उनको अकेले हो गया। घर में कई सदस्य होते हुए भी वे घर में अकेले रहते हैं।

हमारे समाज में वह व्यक्ति जो जीवन भर काम करते हुए परिवार का पालन–पोशण एवं नेतृत्व करता था, वृद्ध हो जाने पर तथा काम छूट जाने पर उसी के परिवार के वही लोग जो समय उसपर आश्रित रहते थे, अब उस पर अपमानजनक टिप्पणियाँ करने से नहीं चूकते हैं। 'गिलिगडु' उपन्यास के इंजीनियर बाबू जसवंत सिंह अपनी पत्नी और दोस्त के निधन के बाद बिलकुल अकेले हो जाते है। इस अकेलापन से उसको बीमारी पड़ गया। इसी बीमारी से छुटकारा पाने के लिए वे डॉक्टर की सलाह मानकर दिल्ली में अपने बेटे नरेन्द्र के पास आकर रहने लगते हैं। यहाँ आकर उन्हें पता चलता है कि अपने बेटे नरेंद्र के मन में उनके प्रति आदर का कोई भाव नहीं है। घर में वे अकेलापन की हाल अनुभव किया। वे स्वयं अपने अस्तित्व और उपयोगिता को लेकर शंकित हो उठते हैं या आत्मदया के शिकार की इस घर में एक नहीं दो कुत्ते हैं – एक टॉमी और दूसरा अवकाश प्राप्त सिविल इंजिनियर जसवंत सिंह। टॉमी की स्थिति निस्सन्देह उसकी बनिस्वत मजबूत है। उनकी इच्छा–अनिच्छा की परवाह में बिछ रहता है पूरा घर। उनके लिए किसी को विघ्न रहना ज़रूरी नहीं लगता। टॉमी अच्छी नस्ल कुत्ता है। सोसाइटी में उनके घर का रुतबा है। उनके चलते उनका रुतबा कलंकित हुआ।''[2]

अपने मित्र कर्नल स्वामी के घर से गहरे सदमे के साथ लौटते ही वे अपने बारे में कुछ निश्चय कर कानपुर वापस चले जाने का निश्चय करते हैं और अपनी वसीयत बदलकर कानपुर की दौलत सुनगुनियाँ के नाम कर देंगे। यही नहीं वसीयत में अपने दाह संस्कार का अधिकार भी वे अपने बेटे नरेंद्र को न देकर सुनगुनियाँ के बेटे अभिषेक असरे देंगे। ये सारी बातें सोचकर वे कानपुर में पहूँचते रहे हैं।

'गिलिगडु' उपन्यास में जसवंत सिंह का चरित्र अंतर्मुखी है। वे जल्दी किसी के सामने खुलते नहीं है लेकिन एक बार किसी से मित्रता स्थापित हुई तो बिना कोई परदा रखे, अपने को पारिभाषिक करने लग जाते हैं। पात्रों के प्रकार की दृष्टि से विचार किया जाए तो जसवंत सिंह गतिमान पात्र है, जिनके चरित्र का विकास लेखिका ने विष्लेशण पद्धति के द्वारा किया गया है।

ज्सवंत सिंह के बेटे नरेंद्र और बहु सुनयना का उनके प्रति व्यवहार इतना कठोर है कि वे दोनों उनका अपमान व तिरस्कार करने का कोई भी अवसर नहीं चुकते और यही कारण था कि बाबू जसवंत सिंह को कभी यह आभास नहीं होता है िकवह अपना घर है। इस उपन्यास में जसवंत सिंह के माध्यम से वृद्धावस्था में प्रवास की समस्या चित्रित हुई है, व्यक्ति समाज में रहते–रहते उससे जुड़ जाता है और जब समाज से अलग होने के बारे में सोचता भी है तो उसी क्षण उसकी सामाजिक मृत्यु हो जाती है। ऐसे में बुजुर्गों को भय रहता है कि नई जगह पर वे मानसिक और संवेदी स्तर पर किसी से कितना जुड़ पाएँगे। यही समस्या बाबू जसवंत सिंह के साथ भी थी।

बूढ़ापे में व्यक्ति अकेला, निर्बल और असहाय हो जाता है। उनकी कार्य करने की क्षमता कमजोर होने के कारण अपने दैनिक कार्य व पोषण केलिए दूसरों पर निर्भर रहना पड़ता है। यही निर्भरता उनकी समस्या का कारण बन जाती है। बाबू जसवंत सिंह को बिमारी के चलते पायजामें में खूब लग जाने पर बहू सुनयवा उलाहना देते हुए कहती है कि ''उनकी पायजामे और चड्ढी बाथरूम में रिन की बही रख दी गई है। कपउे धोने डालने से पहले वे स्वयं धब्बों को तनिक रगड दिया करें।''[3]

वर्तमान में बुजुर्गों की स्थिति के संदर्भ में लेखिका क्षमा शर्मा लिखती है – ''अपने द्वारा ठुकराए जाने का जो मलाल होता है, उसका क्या कोई इलाज है? उस अकेलापन और अपमान के असहाय का क्या जो उनके करीबी जन उन्हें कराते हैं? वे बार बार यह असहाय दिलाते है कि उनकी ज़रूरत अब घर में तो क्या इस धरती पर ही नहीं रही। उन्होंने जिनके लिए अपनी उम्र और अपने सारे संसाधन लगा दिए, वे ही दो जूब की रोटी के लिए दुकारते है।''[4]

'गिलिगडु' उपन्यास के जीवंत पात्र रिटायर्ड कर्नल विष्णु नारायण स्वामी का जीवन मंत्र है ''लिव लाइक शेर ..... अपनी तरह से। अपनी शर्तों पर।''[5] कर्नल स्वामी हमेशा मनगढंत कहानियाँ बनाकर जसवंत सिंह को सुनाते रहते हैं कि उनका भरा–पूरा परिवार है, वे अपनी पोतियों गिलिगडु के साथ खूब मस्ती करती है, उनके बहु–बेटे उनका बहुत ख्याल रखते है जबकि वास्तव में उनका जीवन इसके बिलकुल विपरीत था। बहु सुनयना द्वारा अपमानित होकर जब इसकी शिकायत वे कर्नल स्वामी से करते हैं तो कर्नल स्वामी उन्हें समझाते हुए कहते हैं – ''जीवन मुठभेड़ों से ही जिय जाता है मिस्टर सिंह।''[6] हम देखते हैं कि वृद्धों की एक निश्चित दिनचर्या और सोच बन जाती है और वे एक–दूसरे को देखकर अपनी तुलना भी कई बार करते हैं।

वर्तमान बुजुर्ग की सुरक्षा व सहायता के लिए उनके कानून बने है लेकिन हमारे सामने प्रश्न यह है कि कितने बुजुर्ग अपने ही अक्षम बच्चों के खिलाफ कानून की शरण में जाएँगे और कितने अपने सूक्ष्म बच्चों के खिलाफ कानूनी लडाई में जीत पाएँगे?

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि वर्तमान दौर में व्यक्ति की व्यस्तता के चलते समझौता दोनों पक्षों की करना होगा। पुरानी पीढी को नई पीढ़ी के साथ सामंजस्य बैठाना होगा और नई पीढ़ी को पुरानी पीढ़ी के साथ।

संदर्भ

1. बुढापा सायरी, अकबर इलाहाबाद, रेखता वेबसाइट।
2. गिलिगडु–चित्रा मुद्गल, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण (2004) पृष्ठ संख्या 96
3. वही, पृष्ठ संख्या 71
4. सं. संजय गुप्त, दैनिक जागरण (राष्ट्रीय संस्करण) दैनिक हिंदी समाचार पत्र, रविवारीय अंतराल के अंतर्गत 'अपनों की अनदेखी का दर्द' – क्षमा शर्मा, नई दिल्ली 11 जून 2017
5. गिलिगडु – चित्रा मुद्गल, पृ. 64
6. वही, पृ. 61